आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2589 • उदयपुर, बुधवार 26 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनायें

वाराणसी (उ. प्रदेश), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण दिव्यांग सहायक उपकरण एवं दिव्यांग ऑपरेशन जारी है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 9 जनवरी 2022 को समर्पण विहार कॉलोनी फेज 1 पहाडिया वाराणसी में संपन्न हुआ।

शिविर सहयोगकर्त्ता भारत विकास परिषद वरूणा सेवा संस्थान ट्रस्ट रहा। शिविर में 298 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 101, कैलीपर माप 12, की सेवा हुई ऑपरेशन हेतु 60 का चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री इन्दु सिंह जी (अध्यक्ष भारत विकास परिषद), अध्यक्षता श्री रमेश जी लालवानी जी (संस्थापक भारत विकास परिषद वरूणा सेवा संस्थान), विशिष्ट अतिथि श्री मनोज कुमार जी (उपाध्यक्ष), श्री विवेक कुमार जी सूद (सचिव), श्री ब्रहमानंद जी पेशवानी जी (समाजसेवी), श्री डॉ शिप्रा जी धर (समाजसेवी), सीए आलोक जी (सीए)। डॉ. सचिन कुमार के निदेशन में कैलीपर्स माप टीम श्री पंकज जी (पीएनडॉ), श्री नरेश जी वैष्णव (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री अखिलेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री बजरंग जी (सहायक), श्री गोपाल गोस्वामी जी (सहायक), श्री प्रवीण जी (विडियोग्राफर), श्री कपिल जी (सहायक), श्री संदीप

राजगुरू नगर पुणे (महाराष्ट्र) दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण दिव्यांग सहायक उपकरण एवं दिव्यांग ऑपरेशन जारी है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 9 जनवरी 2022 को मुम्बई माता बाल संगोपन संस्था, महात्मा गाँधी विद्यालय के सामने वाडा रोड राजगुरुनगर, पुणे में संपन्न हुआ।

शिविर सहयोगकर्त्ता रोटरी क्लब ऑफ डायनोमिक मोसरी, रोटरी क्लब ऑफ राजगुरु, मुम्बई माता बाल संगोपन संस्था का रहा। शिविर में 242 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 35, कैलीपर माप की सेवा हुई। ऑपरेशन हेतु 7 का चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री अशोक जी पगारिया (अध्यक्ष रोटरी क्लब मोसरी), अध्यक्षता श्री अजीत जी बालुडा (रोटरी अध्यक्ष राजगुरुनगर), विशिष्ट अतिथि श्रीमती शर्मीला जी (संगोपन संस्थान राजगुरुनगर), श्री विजय जी बसाली (समाजसेवी), श्री प्रदीप जी कासवा (समाजसेवी), श्री कविता जी (समाजसेविका), श्री पी.एम. जैन (एडवोकेट पूणे), डॉ. विजय जी कार्तिक (ऑर्थोपेडिक डॉक्टर) के निर्देशन में कैलीपर्स माप टीम श्री नेहाश अमीतकुमार जी मेहता (पी.एन.डॉ), श्री भगवती जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री देवीलाल जी (सहायक), श्री हरिश जी रावत (सहायक) ने भी सेवायें दी।

कुकटपल्ली (तेलंगाना) दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत कर रहा है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 9 जनवरी 2022 को एवं सत्य साक्षी संघ, लोढ़ा अपार्टमेंट के पास, एस.बी. कॉलोनी कुकटपल्ली हैदराबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता सत्य साक्षी संघ कुकटपल्ली हैदराबाद रहा। शिविर में 150 का रजिस्ट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 24, केलीपर माप 21 की सेवा हुई व 08 का ऑपरेशन हेतु चयन हुआ।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमती जया रमेश जी जागीरदार (समाजसेविका), अध्यक्षता श्री रामया (समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि श्री पारस जी जागीरदार जी, (समाजसेवी), श्रीमती अल्का जी चौधरी (शाखा संयोजिका), श्री धारीणी जागीरदार जी (समाजसेवी), डॉ. अजुमुदीन जी के निर्देशन में केलीपर्स माप टीम श्री आर.एन.ठाकुर (पीएनडी), श्री नाथूसिंह जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री लालसिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश त्रिपाठी जी, श्री बहादुर सिंह (सहायक), श्री अनिल जी (विडियोग्राफर) ने सेवायें दी।

कैथल (हरियाणा), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 9 जनवरी 2022 को एवं सत्य साक्षी संघ, लोढ़ा अपार्टमेंट के पास, एस. बी. कॉलोनी कुकटपल्ली हैदराबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता सत्य साक्षी संघ कुकटपल्ली हैदराबाद रहा। शिविर में 150 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 24, केलीपर माप 21 की सेवा हुई व 08 का ऑपरेशन हेतु चयन हुआ।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमती जया रमेश जी जागीरदार (समाजसेविका), अध्यक्षता श्री रामया (समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि श्री पारस जी जागीरदार जी (समाजसेवी), श्रीमती अल्का जी चौधरी (शाखा संयोजिका), श्री धारीणी जागीरदार जी (समाजसेवी), डॉ. अजुमुदीन जी के निर्देशन में केलीपर्स माप टीम श्री आर.एन.ठाकुर (पीएनडी), श्री नाथूसिंह जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री लालसिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश त्रिपाठी जी, श्री बहादुर सिंह (सहायक), श्री अनिल जी (विडियोग्राफर) ने सेवायें दी।

सम्पादकीय

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। यहाँ पर संविधान को सर्वोच्च प्राथमिकता है। संविधान में देश के सभी धर्मो, सभी मान्यताओं, सभी वर्गो को पूरा–पूरा मौलिक अधिकार संरक्षण दिया गया है।

गणतंत्र की परंपरा कई प्राचीन गणराज्यों में भी पाई जाती रही है। एक दृष्टि से देखें तो लोकतंत्रीय विचारधारा यहाँ के जनमानस में सदियों से परिव्याप्त है। जब देश आजाद हुआ, इसका एकीकरण हुआ तो लिखित संविधान की भी आवश्यकता अनुभव हुई। इसी प्रयास को, इसी भाव को साकार करने में संविधान निर्मात्री सभा एवं प्रारूप लेखन समिति का यह महत्वपूर्ण दायित्व रहा था। अत्यंत सौभाग्य का विषय है कि उस संविधान निर्मात्री सभा के माननीय सदस्य के रूप में उदयपुर (राज.) के आदरणीय बलवंतसिंह जी मेहता भी प्रमुख थे। श्री मेहता जी न केवल स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे वरन् एक सहृदय अध्यात्म प्रेमी भी थे।

सौभाग्य यह भी है कि नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक चेयरमेन श्री कैलाश जी मानव ने भी अनेक बार श्री मेहता जी से सत्संग लाभ प्राप्त किया था। वे कैलाश जी की रोगी सेवा की भावना का आदर करते थे तथा अपना स्नेह प्रदान करते थे।

ऐसे अनेक राष्ट्रभक्तों के सहयोग से आज लोकतंत्रीय प्रणाली में भारत विश्व पटल पर एक चमकता हुआ नक्षत्र है।

कुछ काव्यमय

गणतंत्री गरिमा में जीना।
आजादी के रस को पीना।
करके हम सादर स्वीकार।
भारत मां को करते प्यार।
यही चेतना हर जन में हो।
लोकतंत्र भी हर मन में हो।

– वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

अंतरात्मा की आवाज से खुद को पहचानें

उस मनुष्य को कभी सफलता नहीं मिल सकती जो स्वयं को अभागा, कमजोर और बेबस मानता हो, आप जैसा सोचेंगे वैसा फल पाएंगे। आप खुद को कभी दीनहीन समझे क्योंकि जिस परमात्मा ने आपको बनाया है उसकी दिव्य शक्ति आपके अंदर विराजमान है। ऐसे ही परिस्थिति में दो व्यक्तियों में से एक कहीं पहुंच जाता है और दूसरा वही पड़ा रह जाता है। ऐसा क्यों होता है ? इसका कारण यह भी है कि सभी लोग अपनी आत्मा की आवाज नहीं सुनते हैं। हर व्यक्ति के शरीर में आत्मा का वास है। आत्मा ही परमात्मा का अंश है प्रत्येक आत्मा ईश्वरीय गुणों से ओतप्रोत है। यह निरंतर प्रेरित होती है इससे उसे निरंतर अंदर से सत्य कार्य की प्रेरणा मिलती है। किंतु लोग आत्म प्रेरणा की अवहेलना करते हैं। आत्मा की आवाज को अनसुना कर देते है। आत्मा से बार–बार आवाज गूंजती है अच्छे–अच्छे कार्य करो, आगे बढ़ो निरंतर करते रहो। ईश्वर के निकट पहुंचने का प्रयास करते रहो। इस आवाज को कौन सुनता है?कुछ मुट्ठी भर लोग जो इस आदमी प्रेरणा को सुन लेने में सक्षम है वही आगे बढ़ते जाते हैं वही निरंतर ऊंचाइयों पर चढ़ते चले जाते हैं। वही संसार को कुछ दे जाते हैं । आत्मा की आवाज सुनने वालों ने ही संसार में नए– नए आविष्कार से संसार को सुख सुविधाओं और वैभव दिया है । उन लोगों ने संसार को अपने ज्ञान विज्ञान से चमत्कृत किया है। यह आत्म प्रेरणा ही तो है जिसने हमें आकाश में उड़ने में समर्थ बनाया। वैसे बहुत से लोग योग्य होते हैं परंतु वह जीवन में बहुत काम नहीं कर पाते हैं। ऐसा इसलिए होता है कि वे निराशावादी प्रेरणाओं के शिकार होते हैं। वे जब भी किसी काम में हाथ डालते है तो उन्हें असफलता दिखने लगती है। उनके मन में लाचारी पैदा होने लगती है वे स्वयं को लाचार कमजोर महसूस करते हैं। उनके मन में हीन भावना घर लेती है।

इससे उनकी कार्यशक्ति नष्ट हो जाती है। ऐसे लोगों को सोचना चाहिए कि भाग्य और कुछ नहीं है। आपके कर्म से ही भाग्य बनता और बिगड़ता है। आप अपने भाग्य के निर्माता स्वयं ही है। आपको आपके विचार ही लक्ष्य तक पहुंचाते हैं इसलिए नकारात्मक विचारों को मन में ही जन्म ही ना लेने दें।

– कैलाश 'मानव'

अपनी खुशियाँ बाँटें

हमारा जीवन उत्सवों और आयोजनों से भरा होता है। कोई भी अवसर हो, हम उसे किसी उत्सव से कम नहीं मानते। जन्मदिन विवाह जयन्ती, गृह प्रवेश, नया वाहन खरीदना, पुत्र–पुत्री के परीक्षा परिणाम हो, या फिर होली, दीपावली, रक्षा बन्धन आदि पर्व–त्यौहार। हम सभी अवसर आनन्द से मनाते हैं। हम अपने आनन्द की अभिव्यक्ति के लिए इन अवसरों पर अपने बच्चों, प्रियजनों, मित्रों व रिश्तेदारों को वस्तुओं का उपहार भी देते हैं। बच्चे–बच्चियों को नये कपड़े, जूते, साइकिल, मोटर साइकिल, बहू–बेटी–बहन को साड़ी आभूषण आदि की भेंट। न केवल इतना ही मन्दिरों और पूजा स्थलों पर देवी–देवताओं को मिठाई, वस्त्र आदि भी चढ़ाते हैं। इन सब प्रकल्पों के मूल में प्रियता का भाव है। अब जरा एक दूसरे पहलू पर भी ध्यान दें। अपने आस–पास झोंपड़ पट्टी, कच्ची बस्तियों, बड़े शहरों मे रेल पटरियों के किनारों, सड़क किनारे बेसहारा पड़े असहाय वृद्धों, दिव्यांगों, सरकारी अस्पतालों के परिसरों, मन्दिरों व तीर्थस्थलों के इर्द–गिर्द भीख माँगते बच्चों आदि पर भी नजर डालें। इनमें अनेक ऐसे मिलेंगे जिनके पैरों में न जूते हैं, न तन ढकनें को पर्याप्त वस्त्र, न भर–पेट भोजन ही। दिव्यांगता से ग्रस्त इन भाई–बहनों की दशा तो और भी दयनीय हैं।

आप कल्पना कीजिए–आप द्वारा अपने प्रियजनों विभिन्न अवसरों पर दी जाने भेंट, उपहार का कुछ अंश यदि इन बेसहारा बन्धुओं को दिया जाये तो इन के जीवन में कितनी प्रसन्नता फैलेगी ? अपनी धन–सम्पत्ति का सही उपयोग तो तब ही होगा, जब यह असहाय निर्धन दिव्यांग बन्धुओं का सम्बल सहारा बनें। आपका यह संस्थान यही सब कर रहा है। आप इन्हें भी कुछ दें, आपकी खुशियाँ द्विगुणित होंगी। बस एक बार करके देखें।

– सेवक प्रशान्त भैया

हमारा गणतंत्रोत्सव महान

गणतंत्र दिवस भारत का एक राष्ट्रीय पर्व है जो प्रति वर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है। इसी दिन सन् 1950 को भारत सरकार अधिनियम एक्ट 1935 को हटाकर भारत का संविधान लागू किया गया था। एक स्वतंत्र गणराज्य बनने और देश में कानून का राज स्थापित करने के लिए संविधान को 26 नवम्बर 1949 को भारतीय संविधान सभा द्वारा अपनाया गया और 26 जनवरी 1950 को इसे एक लोकतांत्रिक सरकार प्रणाली के साथ लागू किया गया था। 26 जनवरी को इसलिए चुना गया था क्योंकि 1930 में इसी दिन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई.एन.सी) ने भारत को पूर्ण स्वराज घोषित किया था। यह भारत के तीन राष्ट्रीय अवकाशों में से एक है, अन्य दो स्वतंत्रता दिवस और गांधी जयंती हैं।

सन् 1929 के दिसंबर में लाहौर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ जिसमें प्रस्ताव पारित कर इस बात की घोषणा की गई कि यदि अंग्रेज सरकार 26 जनवरी 1930 तक भारत को स्वायत्तओपनिवेश (डोमीनियन) का पद नहीं प्रदान करेगी, जिसके तहत भारत ब्रिटिश साम्राज्य में ही स्वशासित एकाई बन जाने उस दिन भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के निश्चय की घोषणा की और अपना सक्रिय आंदोलन आरंभ किया। उस दिन से 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त होने तक 26 जनवरी स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता रहा। इसके पश्चात् स्वतंत्रता प्राप्ति के वास्तविक दिन 15 अगस्त को भारत के स्वतंत्रता दिवस के रूप में स्वीकार किया गया। भारत के स्वतंत्र हो जाने के बाद संविधान सभा की घोषणा हुई और इसने अपना कार्य 9 दिसम्बर 1947 से आरंभ कर दिया। संविधान सभा के सदस्य भारत के राज्यों की सभाओं के निर्वाचित सदस्यों के द्वारा चुने गए थे। डॉ. भीमराव अम्बेडकर, जवाहरलाल नेहरू, डॉ राजेन्द्र प्रसाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद आदि इस सभा के प्रमुख सदस्य थे। संविधान निर्माण में कुल 22 समितियाँ थी जिसमें प्रारूप समिति (ड्राटींग कमेटी) सबसे प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण समिति थी और इस समिति का कार्य संपूर्ण 'संविधान लिखना' या 'निर्माण करना' था।

प्रारूप समिति के अध्यक्ष विधिवेत्ता डॉ. भीमराव आंबेडकर थे। प्रारूप समिति ने और उसमें विशेष रूप से डॉ. आंबेडकर जी ने 2 वर्ष, 11 माह, 18 दिन में भारतीय संविधान का निर्माण किया और संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को 26 नवम्बर 1949 को भारत का संविधान सुपूर्द किया, इसलिए 26 नवंबर दिवस को भारत में संविधान दिवस के रूप में प्रति वर्ष मनाया जाता है। संविधान सभा ने संविधान निर्माण के समय कुल 114 दिन बैठक की। इसकी बैठकों में प्रेस और जनता को भाग लेने की स्वतन्त्रता थी। अनेक सुधारों और बदलावों के बाद सभा के 308 सदस्यों ने 24 जनवरी 1950 को संविधान की दो हस्तलिखित कॉपियों पर हस्ताक्षर किये। इसके दो दिन बाद संविधान 26 जनवरी को यह देश भर में लागू हो गया। 26 जनवरी का महत्व बनाए रखने के लिए इसी दिन संविधान निर्मात्री सभा (कांस्टीट्यूएंट असेंबली) द्वारा स्वीत संविधान में भारत के गणतंत्र स्वरूप को मान्यता प्रदान की गई। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि अगस्त 1947 को अपना देश हजारों देशभक्तों के बलिदान के बाद अंग्रेजों की दासता (अंग्रेजों के शासन) से मुक्त हुआ था। इसके बाद 26 जनवरी 1950 को अपने देश में भारतीय साशन और कानून व्यवस्था लागू हुई।

26 जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह पर भारत के राष्ट्रपति द्वारा भारतीय राष्ट्र ध्वज को फहराया जाता हैं और इसके बाद सामूहिक रूप में खड़े होकर राष्ट्रगान गाया जाता है। फिर राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे को सलामी दी जाती है । गणतंत्र दिवस को पूरे देश में विशेष रूप से भारत की राजधानी दिल्ली में बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस अवसर के महत्व को चिह्नित करने के लिए हर साल एक भव्य परेड इंडिया गेट से राष्ट्रपति भवन (राष्ट्रपति के निवास) तक राजपथ पर राजधानी नई दिल्ली में आयोजित होती है। इस भव्य परेड में भारतीय सेना के विभिन्न रेजिमेंट, वायुसेना, नौसेना आदि सभी भाग लेते हैं।

इस समारोह में भाग लेने के लिए देश के सभी हिस्सों से राष्ट्रीय कडेट कोर व विभिन्न विद्यालयों से बच्चे आते हैं, समारोह में भाग लेना एक सम्मान की बात होती है। परेड प्रारंभ करते हुए प्रधानमंत्री अमर जवान ज्योति (सैनिकों के लिए एक स्मारक) जो राजपथ के एक छोर पर इंडिया गेट पर स्थित है पर पुष्प माला अर्पित करते हैं। इसके बाद शहीद सैनिकों की स्मृति में दो मिनट मौन रखा जाता है। यह देश की संप्रभुता की रक्षा के लिए लड़े युद्ध व स्वतंत्रता आंदोलन में देश के लिए बलिदान देने वाले शहीदों के बलिदान का एक स्मारक है। इसके बाद प्रधानमंत्री, अन्य व्यक्तियों के साथ राजपथ पर स्थित मंच तक आते हैं, राष्ट्रपति बाद में इस अवसर के मुख्य अतिथि के साथ आते हैं।

परेड में विभिन्न राज्यों की प्रदर्शनी भी होती है, प्रदर्शनी में हर राज्य के लोगों की विशेषता, उनके लोक गीत व कला का .श्यचित्र प्रस्तुत किया जाता है। हर प्रदर्शनी भारत की विविधता व सांस्कृतिक समृद्धि प्रदर्शित करती है। परेड और जुलूस राष्ट्रीय टेलीविजन पर प्रसारित होता है और देश के हर कोने में करोड़ों दर्शकों के द्वारा देखा जाता है।

कोविड-19 के नियम

- भीड़-भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें।
- सार्वजनिक स्थानों पर ना थूकें।
- बार-बार अपने हाथों को धोएं।
- बाहर जाते समय मास्क जरुर लगाऐ।
- अपनी आंख, नाक या मुंह को न छुएं।
- जुकाम और खांसी होने पर मास्क पहनें।
- छींकते समय नाक और मुंह को ढकें।